59

Self Attested

गाँधी मार्ग की विश्व व्यापकता

सिद्धान्त एवं व्यवहार

मुख्य सम्पादक

प्रो. वी. के. राय

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार सिंह

डॉ. अखिलेश पाल

Scanned by TapScanner

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110090 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com

गाँधी मार्ग की विश्व व्यापकता
सिद्धान्त एवं व्यवहार

संस्करण : 2018
© सम्पादक
ISBN: 978-93-81416-92-1

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित
झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

Self Attested

भूमिका

डॉ. जान हेन्स होप्स का कथन है–"ईसा मसीह के बाद गांधी जी संसार के सबसे महान शक्तिशाली व्यक्ति थे, इसलिए नहीं कि उन्होंने स्वाधीनता संग्राम का सफलतापूर्वक संचालन किया बल्कि इसलिए कि हिंसा, स्वार्थ, शक्ति की तृष्णा और नैतिक पतन के वर्तमान वातावरण में भी उन्होंने सत्य, अहिंसा और साधनों की शुद्धता का कठिन पाठ अपने व्यावहारिक जीवन द्वारा लोगों के गले उतार दिया।"

वर्तमान विश्व मानव इतिहास के चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण न केवल लोगों एवं राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को नया रूप दे रहे हैं, बल्कि मौलिक रूप से दुनियां भर की संस्कृति, विचारधारा, सोच और जीवनशैली को भी नया रूप दे रहे हैं। हर जगह भौतिक विकास के पागलपन का दौर जारी है और इसने इंसानों को समाज और संस्कृति से दूर कर दिया है जिसके कारण विभिन्न प्रकार की हिंसा एवं अपराध की गतिविधियाँ सामने आ रही हैं। हर जगह हिंसा बढी है और सेवा तथा आवश्यकता की जगह लालच ने ले लिया है। इमानदारी और नैतिकता सार्वजनिक जीवन मे अब महत्वपूर्ण नहीं रह गये हैं। संकटों के उपर संकट, भ्रष्टाचार के उपर भ्रष्टाचार बढ रहे हैं जिनका शिकार अन्ततः जनता ही हो रही है। लगातार बढती आर्थिक असमानता तथा हिंसा से मुक्ति के लिए आज दुनियाँ जिस रास्ते की तलाश कर रही है, गाँधी के विचारों में उसकी सबसे सटीक दिशा मौजूद है। गाँधी दर्शन के मूल में मौजूद सत्य अहिंसा, सादगी, अपरिग्रह, श्रम और नैतिकता को अपना कर ही देश और दुनियाँ में सहयोग, सहअस्तित्व एवं समानता पर आधारित शोषणमुक्त समा का निर्माण सम्भव है। गाँधीवाद सिद्धान्त आज की दुनियाँ की चुनौतियों

Scanned by TapScanner

9. गाँधी के सत्याग्रह की अवधारणा का एक विश्लेषण 132
—डॉ० संदीप कुमार मिश्रा

10. महात्मा गाँधी के पर्यावरण पर विचार 144
—डॉ० शानो खान

11. गाँधी जी की पत्रकारिता: एक विश्लेषण 154
—मुकेश कुमार

12. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन 168
—मुलायम सिंह यादव, सुरजन यादव

13. सत्याग्रह का वर्तमान परिप्रेक्ष्य 209
—डॉ० सुनीता बघेल

14. गाँधी का स्वराज्य चिंतन 216
—डॉ० रुचि त्रिपाठी

15. गाँधी दर्शन: एक अध्ययन 228
—डॉ० श्रद्धा गर्ग

16. गाँधी जी की दृष्टि में भारत के गांव एवं किसान 234
—डॉ० अखिलेश त्रिपाठी

17. महात्मा गाँधी एवं असहयोग आन्दोलन 245
—डॉ० ओम प्रभा

Self Attested

1

गाँधी की ताकत कस्तूरबा

डॉ. [illegible]

सारांश

गांधी जी के संपूर्ण जीवन का पाठ करते हुए यह प्रतीत होता है कि [illegible] वह एक व्यक्ति के साथ—साथ भारत के एक ऐसे व्यक्तित्व [illegible] केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण मानवता के लिए वरदान हुए। [illegible] समस्त जीवन शांति, प्रेम, करुणा एवं अहिंसा का जीता—जागता उदाहरण है। निःसंदेह उनके इस बनने के क्रम में किसी न किसी का सहयोग हमेशा [illegible] है। इसमें गुरू, परिवेश, पुस्तकें और कस्तूरबा गांधी को मुख्यत: [illegible] जा सकता है। कस्तूरबा जो उनकी अर्धांगिनी थीं, उनमें से एक थीं। [illegible] गांधी का विवाहोपरान्त त्याग, शीलता एवं सौहार्द निःसंदेह गांधी [illegible] व्यापक जीवन संसार के लिए रीढ के समान रहा है। उन्होंने न केवल [illegible] स्त्री संस्कृति के मिसाल को प्रस्तुत किया बल्कि गांधी जी [illegible] अपने सहयोग से कभी वंचित नहीं होने दिया। गांधी जी ने [illegible] था—'अहिंसा सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। यदि हम इसका [illegible] सकते हैं तो हमें इसकी भावना को अवश्य समझना चाहिए और [illegible] संभव हो हिंसा से दूर रहकर मानवता का पालन करना चाहिए' [illegible] में यह देखने की कोशिश की गई है कि गांधी की [illegible] एक स्त्री का क्या योगदान रहा? कस्तूरबा ने [illegible] को कैसे धारण किया। तत्कालीन [illegible] आज के स्त्री विमर्श के साथ कस्तूरबा को कैसे [illegible]

15

गाँधी दर्शनः एक अध्ययन

डॉ0 श्रद्धा गर्ग

सारांश

महात्मा गाँधी साध्य से अधिक साधन पर ध्यान देना आवश्यक मानते थे। उनका कहना था कि यदि साध्य पवित्र और मानवीय है तो साधन भी वैसा ही शुद्ध, वैसा ही पुनीत और वैसा ही मानवीय होना चाहिए। हम देखते हैं कि साध्य और साधन की समाज पवित्रता पर बल देना और उसका आश्रय ग्रहण करना उनकी साधना रही है। उनके इन मौलिक विचारो ने मानव समाज के विकास के इतिहास मे एक अत्यत उज्जवल और पवित्र अध्याय की रचना की है। गाधी जी ने युग युग से मनुष्यता के विकास द्वारा प्रदर्षित आदर्शो का प्रादुर्भाव समवेत रूप मे ही दिखाई देता है ।

की–वर्ड्सः सत्य, अहिंसा, साध्य, साधन।

महात्मा गाँधी ने किसी नए दर्शन की रचना नही की है, वरन उनके विचारों का जो दार्शनिक आधार है, वही गाँधी दर्शन है। ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाले भारतीय आस्तिक के ऊपर जिस प्रकार के दार्शनिक संस्कार अपनी छाप डालते है, वैसी ही छाप गाधी जी के विचारों पर पडी हुई है। वे भारत के मूलभूत कुछ दार्शनिक तत्वो मे अपनी आस्था प्रकट करके अग्रसर होते हैं। और उसी से उनकी सारी विचारधारा प्रवाहित होती है। किसी गंभीर रहस्यवाद में न पड़कर वे यह मान लेते है कि विषमय, सत्यम, ओर चिन्मय ईश्वर सृष्टि का मूल है। और उसने सृष्टि की रचना किसी प्रयोजन से की है। वे ऐसे देश में पैदा हुए जिसने चैतन्य आत्मा की अक्षुण और अमर सत्ता स्वीकार की है। वे उस देश मे पैदा हुए जिसने सृष्टि और प्रकृति के मूल मे एक मात्र अविनश्वर चेतन का दर्शन किया गया है। और सारी सृष्टि की प्रक्रिया को भी सप्रयोजन स्वीकार किया जाता है। उन्होने यद्यपि इस प्रकार के दर्शन की कोई व्याख्या अथवा उसकी गूढता के विषय मे कही विषाद और व्यास्थित रूप से कुछ लिखा नही है पर उनके विचारो के अध्ययन करने पर उनकी उपयुक्त दृष्टि का आभास मिलता है। उनका वह प्रसिद्ध वाक्य है, जिस प्रकार मै किसी स्थूल पदार्थ को अपने सामने देखता हूँ उसी प्रकार मुझे जगत के मूल मे राम दर्शन होते है। एक बार उन्होने कहा था, अधकार मे प्रकाश की ओर मृत्यु में जीवन की अक्षय सत्ता प्रतिष्ठित है।

यहाँ उन्हे जीवन ओर जगत का प्रयोजन दिखाई देता है। वे कहते है कि जीवन का निर्माण ओर जगत की रचना शुभ और अशुभ जड और चेतन को लेकर हुई है। इस रचना का प्रयोजन यह है कि असत्य पर सत्य की और अशुभ पर शुभ की विजय हो। वे यह मानते है कि जगत का दिखाई देनेवाला भौतिक अश जितना सत्य है उतना ही और उससे भी अधिक सत्य न दिखाई देने वाला एक चेतन भावलोक है जिसकी व्यंजना जीवन है। फलतः वे यह विश्वास करते है कि मनुष्य मे जहाँ अशुभ प्रवृतियाँ है वहीं उसके हृदय में शुभ का निवास है। यदि उसमे पशुता है तो देवत्व भी प्रतिष्ठित है। सृष्टि का प्रयोजन यह है कि उसमे देवत्व का प्रबोधन हो और पशुता प्रताड़ित हो, शुभाष जाग्रत हो और अशुभ का पराभव हो। उनकी दृष्टि में जो कुछ अशुभ है। असुदर है अशिव है। असत्य है वह सब अनैतिक है जो शुभ है जो सत्य है, जो शुभ है, वह नैतिक है। वही सत्य है, वही शिव और सुन्दर है। जो सुंदर है उसे शिवमय और सनमय होना चाहिए। उन्होंने यह माना है कि सदा मनुष्य अपने शरीर को अपने भोग को अपने स्वार्थ को अपने अहंकार को, पेट को ओर अपने प्रजनन को प्रमुखता प्रदान करता रहा है। पर जहाँ ये प्रवृतियाँ मनुष्य मे है जिनसे वह प्रभावित होता रहता है वही उसी मनुष्य के उत्सर्ग और त्याग, प्रेम ओर उदारता निः स्वार्थता तथा व्यष्टि को समाष्टि में लय करके अहंभाव का सर्वथा त्याग करके विराट में लय हो जाने की देवी भावना भी वर्तमान है। इन भावो को उद्बोधन तथा उन्नयन दानव पर देव की विजय का साधन है। इसी में अनैतिकता का पराभव और अजेय नैतिकता की जीत है।